यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2024

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 आगम

अंक -100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

प्रश्न 1. निम्न गाथाओं को पुर्ण करो- **10x2=20**

1. ..... अणंते सिद्धे .....।
..... देस पएसेहिं जे पुट्ठा।

2. सिद्धति .....।
..... अजरा .....॥

3. संघट्टइता .....।
..... ति य॥

4. अवण्णवायं च ..... पडीणीय च मासं
..... च, भासं न .....।

5. ..... सिणेहमप्पणो ..... व पाणियं।
से सव्व ..... समयं .....।

6. ..... पओवसोहियं।
राग दोस .....॥

7. कलह .....।
..... ति वुच्चइ॥

8. ..... सुरक्खिए।

..... बहुस्सुए।

9. निदेसवती पुण जे .....

तरितु ते .....।।

10. तेसि गुरूणं .....सुभासियाइ।

चरे मुणी ..... स पुज्जो।

प्रश्न 2. निम्न सूत्रो को पुर्ण करो– **10x1=10**

1. श्रुतं मति पूर्व .....भेदम्

2. सर्व ..... केवलस्य।

3. ..... मुक्ताश्च

4. ..... श्रोत्राणि

5. ..... चतुर्निकायाः

6. ..... परापरे ..... मुहुर्ते

7. .....दुःखाः।

8. परतः परतः .....।

9. ..... प्रदीपवत्।

10. उत्पाद ..... सत्।

प्रश्न 3. निम्न गाथाओं का भावार्थ लिखो– **10x2=20**

1. ''ओगाहणाए सिद्धा, भवत्तिभागेण होंति परिहीणा

संठाणमणित्थत्थं, जरामरणविप्पमुक्काणं।

भावार्थ– .....

.....

2. ''अतुलसुहसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता

सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंत्ति सुही सुहं पत्ता''।

भावार्थ– .....

.....

3. ''अरई गण्डं विसूइया, आयका विविहा फुसन्ति ते

विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम! मा पमायए।''

भावार्थ– .....

.....

4. ''अवउज्झिय मित्तबंधवं विउलं चेव धणोहसंचयं
मा तं बिइयं गवेसए समयं गदेयम! मा पमायए''

भावार्थ- .....

.....

5. ''जहाऽऽइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए''

भावार्थ- .....

.....

6. ''जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा
सीया लीलवन्तपवहा एवं हवइ बहुस्सुए।''

भावार्थ- .....

.....

7. ''शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराद्धयोर्द्वयोः''।

भावार्थ- .....

.....

8. ''वर्तना परिणामः किया परत्वापरत्वे च कालस्य''।

भावार्थ- .....

.....

9. ''शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः''

भावार्थ- .....

.....

10. ''प्राङू मानुषोत्तरान् मनुष्याः''

भावार्थ- .....

.....

प्रश्न 4. निम्न प्रश्नो के उत्तर संक्षिप्त में दो- **10x1=10**

1. एक आत्मा में कितने ज्ञान हो सकते है।

.....

2. स्थावर जीवों के कितने भेद है।

.....

3. अवधि और मनः पर्याय का अन्तर किससे जानना चाहिये।

.....

4. मनुष्य कहाँ उत्पन्न होते है।

.....

5. मनुष्य जन्म पाकर भी क्या पाना और भी दुर्लभ है।

.....

6. कौन बाद में पश्चाताप करता है।

.....

7. सुविनीत कौन कहलाता है। कोई एक

.....

8. नाना प्रकार की ओषधियो से कौन प्रदीप्त है।

.....

9. काल के उपकार कितने है।

.....

10. सनत्कुमार की जघन्य स्थिति कितनी है।

.....

प्रश्न 5. हाँ या नहीं में उत्तर दो- **10x1=10**

1. गुण के समानता होने पर समान पुद्गलो का बंध होता है। ( )
2. विग्रह गति में कार्मण काय योग ही होता है। ( )
3. भव प्रत्यय-अवधिज्ञान नैरयिकों और देवताओं को होता है। ( )
4. पुद्गल परमाणु रूप और स्कन्ध रूप है। ( )
5. तिर्यंच की उत्कृष्ट स्थिति करोड़ पुर्व की है। ( )
6. धर्म रूपी वृक्ष का परम रस युक्त फल विनय है। ( )
7. राग द्वेष को विच्छिन्न कर श्री गौतम स्वामी सिद्धि गति को प्राप्त हुए। ( )
8. बाह्य और अभ्यांतर संयोगो से युक्त अनगार भिक्षु है। ( )
9. जो अत्यंत रस लोलुप न हो वह शिक्षाशील है। ( )
10. स्वयम्भुरमण समुद्र नानबिध रत्नो से परिपुर्ण है। ( )

प्रश्न 6. निम्न गाथाओं का भावार्थ लिखो- **10x1=10**

1. शेष सब ज्ञान प्रत्यक्ष-प्रमाण है।

गाथा- .....

.....

2. जम्बूद्वीप तथा लवणोदधि आदि शुभ नाम वाले असंख्यात द्वीप समुद्र मध्यलोक में है।

गाथा–.....

.....

3. किंतु गति, शरीर का परिमाण, परिग्रह और अभिमान, इन विषयों में उपर के देव हीन है।

गाथा–.....

.....

4. धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य की स्थिति समग्र लोकाकाश में है।

गाथा–.....

.....

5. त्रीन्द्रिय अवस्था में गया हुआ जीव उत्कृष्टतः संख्यात काल तक रहता है, अतः गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो।

गाथा– .....

.....

6. तुम्हारा शरीर सब प्रकार से जीर्ण हो रहा है, तुम्हारे सिर के बाल सफेद हो रहे है तथा पूर्ववर्ती नेत्रबाल क्षीण हो रहा है। अतः गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो।

गाथा– .....

.....

7. प्रबुद्ध, उपशान्त और संयत हो कर तु गाँव और नगर में विचरण कर, शांति मार्ग की संवृद्धि कर। गौतम! इसमें समयमात्र का भी प्रमाद न कर।

गाथा– .....

.....

8. चौदह प्रकार से व्यवहार करने वाला अविनीत कहलाता है और वही निर्वाण प्राप्त नहीं करता।

गाथा–.....

.....

9. जैसे सहस्त्राक्ष, वज्रपाणि एवं पुरन्दर शक्र देवो का अधिपति होता है, वैसे ही बहुश्रुत भी देवों का स्वामी होता है।

गाथा–.....

.....

10. जो संयोग से सर्वथा मुक्त, अनगार भिक्षु है, उसके आचार को अनुक्रम से प्रकट करूँगा, मुझ से सुनो।

गाथा– .....

.....

प्रश्न 7. रिक्त स्थान की पूर्ति करो- **10x1=10**

1. नैगम नय के ..... और ..... ये दो भेद है।
2. ..... नपुसंक नहीं होते
3. मनुष्य ..... और ..... भेद से दो प्रकार के होते है।
4. ताराओ की उत्कृष्ट स्थिति ..... परिमाण है?
5. रूपी द्रव्यों में ..... परिणमन होता है।
6. जो ..... प्रदान जीवन में रत है वह पुज्य है।
7. समस्त प्राणियो को ..... तक भी मनुष्य जन्म पाना दुर्लभ है।
8. ..... को विच्छिन्न कर श्री गौतम स्वामी सिद्ध गति को प्राप्त हुये।
9. जो सदा ..... में रहता है वह शिक्षा प्राप्त करने योग्य होता है।
10. जिस प्रकार ..... स्वयं भूरमण समुद्र नानाविध रत्नों से परिपूर्ण होता है।

प्रश्न 8. जोड़ी मिलाओ- **10x1=10**

1. जेणऽप्पाणं	–	A) अणुत्तरं
2. अभिक्खणं	–	B) परियायजेट्ठा
3. खेमं	–	C) परिणामः
4. लद्धूण वि	–	D) तासु
5. राइणिएसु	–	E) संपाउणेज्जासि
6. कालं छंदोवयारं	–	F) समनस्का
7. तद्भावः	–	G) द्विचरमा
8. विजयादिषु	–	H) हेउहिं
9. नरकाः	–	I) आयरियत्तणं
10. संज्ञिनः	–	J) पकुवई